www.nawalstimes.com nawalstimes

नवल्स टाइम्स

गोरखपुर, मंगलवार , 22 जुलाई 2025 वर्ष-02, अंक-57 मूल्य-6 रुपये, पेज-14

08 शब्द पुरुष की पुण्यतिथि....
10 संस्थापक की पुण्यतिथि पर....
14 शिक्षा, साहित्य और संस्कृति के अग्रदूत रहे...

■ राप्तीनगर ■ सूरजकुंड ■ कुसम्ही ■ फुलवरिया ■ रुस्तमपुर ■ मोहनापुर ■ बैम्बिनी ■ उनवल ■ खजनी ■ बख्शीपुर ■ तुर्कमानपुर ■ अयोध्या ■ मऊ

आचार्य सत्य नारायण त्रिपाठी की 8वीं पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि सभा सम्पन्न

प्रकाश पुंज थे 'शब्द पुरुष'

■ शिक्षाविद् की स्मृति में श्रद्धांजलि, विचारों से जीवित रहा दर्शन ■ नवल्स ग्रुप के चेयरमैन डॉ. संजयन त्रिपाठी ने पिता के सिद्धांतों को किया साझा ■ सभी शाखाओं के शिक्षक, स्टाफ और परिवारजनों की गरिमामयी उपस्थिति ■ आचार्य त्रिपाठी के शिक्षण-मूल्यों पर वक्ताओं ने रखे विचार

केंद्रीय कार्यालय

नवलायन। आचार्य सत्यनारायण त्रिपाठी की आठवीं पुण्यतिथि पर नवलायन में साहित्य सभा का आयोजन किया गया। इस सभा में नवल्स ग्रुप के चेयरमेन डॉ. संजयन त्रिपाठी, नवल्स ग्रुप के निदेशक डॉ.प्रांजल त्रिपाठी, प्रखर त्रिपाठी, श्रीमती प्राची त्रिपाठी, शिक्षकों, प्रिंसिपलों, सम्मानित सदस्यों और केंद्रीय कार्यालय के कर्मचारियों ने भी अपना श्रद्धासुमन निवेदित किया गया। इस अवसर पर संस्था के चेयरमैन डॉ. संजयन त्रिपाठी ने उनके विचारों और सिद्धांतों को साझा करते हुए कहा कि "पिता का जीवन शिक्षा और सेवा का प्रतीक था, जिसे आज भी हम अपने कार्यों में उतारने का प्रयास करते हैं।"

साहित्य सभा

कार्यक्रम में डॉ. प्रांजल त्रिपाठी, डॉ. प्रखर त्रिपाठी, सोनी, ओझा, बबिता सहित परिवार के अन्य सदस्य उपस्थित रहे। सभी शाखाओं के प्रधानाचार्य, शिक्षकगण, फोर्स ऑफिस एवं हेड ऑफिस के कर्मचारी गणों ने भी श्रद्धासुमन अर्पित कर दिवंगत आत्मा को नमन किया।

सभा के दौरान वक्ताओं ने आचार्य त्रिपाठी के शैक्षणिक योगदान, अनुशासनप्रियता और नैतिक मूल्यों की चर्चा करते हुए उन्हें युगद्रष्टा बताया। आयोजन पूर्ण गरिमा और श्रद्धा के साथ सम्पन्न हुआ।

नवलायन परिसर में हुई गरिमामयी उपस्थिति
विचारों ने दिया प्रेरणा का संदेश

■ ***नवलायन में श्रद्धासुमन अर्पण*** *– दिवंगत शिक्षाविद् आचार्य सत्य नारायण त्रिपाठी की पुण्यतिथि पर आयोजित श्रद्धांजलि सभा में सैकड़ों लोगों ने श्रद्धांजलि दी।*

■ ***नवल्स ग्रुप के चेयरमेन डॉ. संजयन त्रिपाठी ने साझा किए विचार*** *- उन्होंने पिता के आदर्शों और शिक्षण पद्धति को याद करते हुए कहा कि "गुरु केवल ज्ञान नहीं, संस्कार भी देते हैं।"*

■ ***परिवार की भावपूर्ण उपस्थिति*** *– डॉ. प्रांजल त्रिपाठी, डॉ. प्रखर त्रिपाठी, श्रीमती प्राची त्रिपाठी सहित परिजनों ने श्रद्धासुमन अर्पित किए।*

■ ***संपूर्ण संस्था ने जताई श्रद्धा*** *– सभी शाखाओं के प्रधानाचार्य, शिक्षकगण, फोर्स ऑफिस एवं केंद्रीय कार्यालय के समस्त कर्मचारी मौजूद रहे।*

■ ***स्मृति को समर्पित आयोजन***–*आयोजन में आचार्य त्रिपाठी जी के योगदान को स्मरण करते हुए उनके जीवन–दर्शन और शिक्षण–विचारों पर वक्ताओं ने प्रकाश डाला।*

2_Page_01.qxd 22/07/2025 1:20 PM Page 1

नवलायन परिसर में आयोजित श्रद्धांजलि सभा में भावविभोर माहौल

आदर्श शिक्षक को सादर नमन

पुण्यतिथि पर उमड़ा स्नेह–सम्मान

- नवल्स ग्रुप के निदेशक डॉ. प्रांजल, डॉ. प्रवर सहित परिवार के सभी सदस्य रहे उपस्थित
- त्रिपाठी जी के आदर्श आज भी संस्था की आत्मा में जीवित

‘जिंदा नहीं तो जिंदगी क्या, झुकना नहीं तो बंदगी क्या।
कहने को तो है परिंदा मगर, पंख नीं तो परिंदगी क्या’।।

श्रद्धांजलि

नवलायन। उद्भट विद्वान, प्रख्यात भाषाविद्, यशस्वी कवि, निर्मल साहित्य साधक और नवल्स ग्रुप के प्रकाश स्तंभ व संस्थापक चेयरमैन ‘शब्द पुरुष’ आचार्य सत्यनारायण त्रिपाठी की आठवीं पुण्यतिथि पर 16 जुलाई को उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गयी।

नवल्स ग्रुप की सभी शाखाओं में उन्हें विद्यार्थियों समेत समस्त विद्यालय परिवार ने श्रद्धासुमन अर्पित किया। सायंकाल नवलायन पर पूर्वांचल हिंदी मंच द्वारा साहित्य सभा का आयोजन किया गया जिसमें जाने-माने विद्वानों समेत कई विशिष्ट अतिथियों ने उनके व्यक्तित्व व कृतित्व की चर्चा करते हुए उन्हें संपूर्ण मनुष्य बताया। अतिथियों का स्वागत माल्यार्पण व उत्तरीय अर्पित कर किया गया।

शिक्षकों और छात्रों ने पुष्पांजलि अर्पित कर दी श्रद्धांजलि

विचारों में अमर रहे आचार्य त्रिपाठी

पुण्यतिथि पर भावभीनी श्रद्धांजलि

- वक्ताओं ने आचार्यजी के जीवन-दर्शन और शिक्षण-पद्धति को बताया प्रेरणास्रोत
- संस्था में उनके मूल्यों को निरंतर आगे बढ़ाने का लिया संकल्प

04_Page_01.qxd 22/07/2025 3:26 PM Page 1

नवलायन परिवार ने एकजुट होकर दी श्रद्धांजलि, संकल्प और समर्पण का वातावरण

शिक्षा-ज्योति के पुंज को श्रद्धा-सुमन

त्रिपाठी जी की स्मृति में विशेष आयोजन

- चेयरमैन डॉ. संजयन त्रिपाठी ने कहा - "पिताजी की सोच संस्था की रीढ़"
- फोर्स ऑफिस, हेड ऑफिस और सभी शाखाओं की उपस्थिति रही उल्लेखनीय

दो मिनट का मौन-दिवंगत शिक्षाविद् को दी सामूहिक श्रद्धांजलि

स्वर्गीय प्रो. सत्यनारायण जी की आठवीं पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि सभा

■ **प्रधानाचार्य ने व्यक्त किए विचार :** उनके शिक्षाक्षेत्रीय योगदान को बताया प्रेरणास्रोत, ■ **छात्रों की भावभीनी प्रस्तुति :** कविता, भाषण और भजन के माध्यम से दी श्रद्धांजलि

श्वेता त्रिपाठी/शिक्षक संवाददाता

नवल्स रूस्तमपुर। विद्यालय में बुधवार को महान शिक्षाविद् एवं प्रेरणादायक व्यक्तित्व स्वर्गीय प्रो. सत्यनारायण जी की आठवीं पुण्यतिथि श्रद्धा और सम्मान के साथ मनाई गई। इस अवसर पर एक प्रार्थना सभा का आयोजन किया गया, जिसमें विद्यालय के सभी शिक्षकगण, छात्र-छात्राएँ एवं अन्य कर्मचारी शामिल हुए।

सभा की शुरुआत मौन प्रार्थना के साथ हुई, जिसके बाद प्रधानाचार्य महोदय ने प्रो. सत्यनारायण जी के शिक्षा जगत में योगदान पर प्रकाश डालते हुए कहा कि उन्होंने अपने जीवन में सेवा, सादगी और समर्पण को शिक्षा के माध्यम से जीवंत किया। उनका जीवन और कार्य आज भी हम सभी के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

कार्यक्रम में छात्रों ने कविता पाठ, भाषण और भजन के माध्यम से उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। उनकी प्रस्तुतियाँ भावनात्मक थीं और श्रोताओं को उनके व्यक्तित्व की महानता का स्मरण कराती रहीं।

समारोह का मूल उद्देश्य छात्रों को जीवन में नैतिक मूल्यों, सेवा भावना और त्याग के महत्व को समझाना था। अंत में सभी उपस्थित लोगों ने दो मिनट का मौन रखकर दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की।

यह आयोजन विद्यालय के संस्कार, परंपरा और मूल्यों को प्रतिबिंबित करने वाला रहा, जिसने सभी को आत्मचिंतन एवं प्रेरणा से भर दिया।

"साहित्य के साधक और जीवन मूल्यों के मार्गदर्शक रहे प्रो. त्रिपाठी"

'शब्द पुरुष'

प्रो. सत्यनारायण त्रिपाठी की पुण्यतिथि पर नमन

- विद्यालय परिवार ने भावपूर्ण कविता पाठ और मौन श्रद्धांजलि के साथ किया स्मरण
- "शब्द पुरुष" के साहित्यिक योगदान और मानवीय मूल्यों को किया गया नमन

प्रीति पांडेय/शिक्षक संवाददाता

नवल्स कुस्मही। नवल्स एकेडमी ग्रुप ऑफ स्कूल के संस्थापक अध्यक्ष, साहित्यकार एवं ग़ज़लकार श्रद्धेय स्व. प्रो. सत्यनारायण त्रिपाठी जी की आठवीं पुण्यतिथि पर विद्यालय परिवार, कुसम्ही द्वारा भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

"लघु से गुरु बनना ही मनुष्यता की यात्रा है"– इसी मूल विचार को आधार बनाते हुए विद्यालय प्रांगण में एक भावगर्भित सभा आयोजित की गई। स्व. त्रिपाठी जी को 'शब्द पुरुष' की उपाधि से अलंकृत किया गया था। वे आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी के शिष्य थे और उत्तर आधुनिक हिंदी साहित्य के सशक्त हस्ताक्षर रहे।

सभा के दौरान उनके व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए उन्हें सन्मार्ग दर्शक, स्नेहशील अभिभावक और साहित्यिक आलोक स्तंभ के रूप में याद किया गया। इस अवसर पर एक भावपूर्ण रचना –

"दर्द पिया कर मगर तबियत से, मौज किया कर मगर तबियत से,
ख़्वाब जिया कर मगर तबियत से, जख्म सिया कर मगर तबियत से,
बैर किया कर मगर तबियत से, मान लिया कर मगर तबियत से..."

– की प्रस्तुति ने माहौल को भावविभोर कर दिया।

इसके अतिरिक्त जीवन के गूढ़ संदेश लिए यह पंक्तियाँ –

"राम बने राजा नहीं विधि ने कर दी घात! सिंह डर गया सियार से, समय समय की बात!!"

– समय की निष्ठुरता और परिवर्तनशीलता को दर्शाती रहीं।

विद्यालय परिवार ने इस अवसर पर दिवंगत आत्मा की शांति हेतु मौन रख श्रद्धा-सुमन अर्पित किए।

07_Page_01.qxd 22/07/2025 1:41 PM Page 1

विद्यालय प्रबंधन व शिक्षकों द्वारा श्रद्धा-भाव से सुंदरकांड पाठ का आयोजन

नवल्स एकेडमी कुसम्ही में सुंदरकांड पाठ का हुआ भव्य आयोजन

◆ धार्मिक आस्था और संस्कारों से ओतप्रोत रहा कार्यक्रम ◆ संगीतमय पाठ से गुंज उठा पूरा परिसर, बना भक्तिमय वातावरण ◆ हनुमान जी की महिमा का गुणगान, श्रीराम भक्ति में लीन रहे सभी

प्रीति पांडेय/शिक्षक संवाददाता

नवल्स कुसम्ही। नवल्स एकेडमी कुसम्ही में 12 जुलाई 2025 को विद्यालय प्रबंधन एवं शिक्षकों द्वारा श्रद्धा और भक्ति के साथ सुंदरकांड पाठ का आयोजन किया गया। विद्यालय परिसर में हुए इस आध्यात्मिक कार्यक्रम में सभी शिक्षकों और कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों एवं शिक्षकों में धार्मिक आस्था, सांस्कृतिक संस्कार एवं सकारात्मक ऊर्जा का संचार करना था। संगीतमय पाठ के दौरान वातावरण भक्तिमय हो उठा और उपस्थितजनों ने श्री हनुमान जी की महिमा का भावपूर्ण गुणगान किया।

विद्यालय के प्रबंधक एवं प्रधानाचार्य ने अपने संबोधन में कहा कि ऐसे धार्मिक आयोजनों से विद्यालय परिवार में एकता, अनुशासन और सांस्कृतिक मूल्यों की भावना को मजबूती मिलती है। कार्यक्रम का समापन आरती व प्रसाद वितरण के साथ हुआ। उपस्थित सभी लोगों ने इस पहल की सराहना की और विद्यालय परिवार को शुभकामनाएं दीं।

मुख्य बिंदु

- धार्मिक आयोजनों से विद्यार्थियों व स्टाफ में सकारात्मक ऊर्जा का संचार
- प्रबंधक व प्रधानाचार्य ने एकता, अनुशासन व संस्कृति को बताया आयोजन का आधार
- आरती और प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम का हुआ समापन
- उपस्थितजनों ने पहल की सराहना की, दी विद्यालय परिवार को शुभकामनाएँ

08_Page_01.qxd 22/07/2025 1:42 PM Page 1

आठवीं पुण्यतिथि पर बैम्बिनी विद्यालय में भावभीनी श्रद्धांजलि सभा का हुआ आयोजन

'शब्द पुरुष' की पुण्य स्मृति में श्रद्धांजलि

विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती बबीता शर्मा, शिक्षिकाओं और छात्रों ने उनके चित्र पर पुष्प अर्पित किए, आचार्य त्रिपाठी जी को उनके महान शैक्षणिक योगदान और प्रेरणादायी व्यक्तित्व के लिए सादर नमन किया गया।

ममता शुक्ला/शिक्षक संवाददाता

नवल्स बैम्बिनी। नवल शिक्षण संस्थान समूह के संस्थापक अध्यक्ष, शब्दपुरुष के रूप में विख्यात स्वर्गीय आचार्य सत्यनारायण त्रिपाठी जी की आठवीं पुण्यतिथि के अवसर पर बैम्बिनी विद्यालय परिवार द्वारा एक श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती बबीता शर्मा, शिक्षिकाओं एवं छात्रों ने उनके चित्र पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि अर्पित की।

इस अवसर पर वक्ताओं ने कहा कि आचार्य त्रिपाठी जी केवल एक शिक्षाविद नहीं, बल्कि एक सच्चे आचार्य थे, जिन्होंने शिक्षा को केवल ज्ञान का माध्यम न मानकर उसे संस्कारों का दीपक माना। उनके नेतृत्व में नवल शिक्षण संस्थान एक शब्द-समृद्ध संस्कृति और चरित्र निर्माण की प्रयोगशाला बन गया। वे आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की परंपरा के सच्चे अनुयायी थे, जिनकी शैली, दृष्टिकोण और भाषा की गहराई को उन्होंने न केवल आत्मसात किया, बल्कि व्यवहार में उतारा।

वक्ताओं ने यह भी कहा कि उनका जीवन इस बात का प्रतीक है कि शब्दों में शक्ति होती है, विचारों में गति होती है और शिक्षा में सच्चा परिवर्तन संभव है। इस अवसर पर विद्यालय परिवार ने उनके दिखाए मार्ग पर चलने की प्रतिज्ञा ली।

अंत में सभी ने दो मिनट का मौन रखकर श्रद्धासुमन अर्पित किया और कहा –

"शब्दों के साधक, विचारों के प्रहरी, और शिक्षा के प्रहरी को विनम्र नमन।"

नवाल्स नेशनल एकेडमी, मोहनापुर में साहित्यिक प्रेरणा से ओत-प्रोत आयोजन

शब्दों का साधक : सत्यनारायण त्रिपाठी की पुण्यस्मृति में नमन

◆ कार्यक्रम का आयोजन प्रधानाचार्या श्रीमती दीपिका सिंह, हिंदी विभागाध्यक्ष श्रीमती क्षमता तिवारी एवं श्रीमती नीतू पांडे के मार्गदर्शन में हुआ ◆ कक्षा 12 के छात्र ऋषभ तिवारी ने त्रिपाठी जी के जीवन एवं रचनाओं पर प्रेरणाप्रद भाषण दिया ◆ कक्षा 9 के छात्र रुद्र शर्मा और कक्षा 7 की छात्रा तमन्ना सिंह ने उनके आदर्शों को अपनाने का आह्वान किया।

डॉ शशि भूषण पाण्डेय/शिक्षक संवाददाता

नवल्स मोहनापुर। नवाल्स नेशनल एकेडमी में हिंदी साहित्य की प्रतिष्ठित विभूति, शब्दपुरुष के नाम से विख्यात स्वर्गीय सत्यनारायण त्रिपाठी जी की पुण्यतिथि पर एक भावभीनी श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का संचालन प्रधानाचार्या श्रीमती दीपिका सिंह तथा हिंदी विभागाध्यक्ष श्रीमती क्षमता तिवारी एवं श्रीमती नीतू पांडे के मार्गदर्शन में संपन्न हुआ।

कार्यक्रम की शुरुआत कक्षा 12 के छात्र ऋषभ तिवारी के प्रेरणादायक भाषण से हुई, जिसमें उन्होंने त्रिपाठी जी के जीवन, साहित्यिक योगदान और उनके आदर्शों को विस्तार से प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि त्रिपाठी जी की रचनाएं आज भी युवाओं में नैतिक मूल्यों, देशभक्ति और साहित्यिक चेतना का संचार करती हैं।

इसके पश्चात कक्षा 9 के छात्र रुद्र शर्मा और कक्षा 7 की छात्रा तमन्ना सिंह ने त्रिपाठी जी के सिद्धांतों और मूल्यों पर आधारित अपने विचार साझा किए। दोनों ने अपने सहपाठियों से जीवन में लगन, विनम्रता और ज्ञान की तलाश जैसे गुणों को आत्मसात करने का आह्वान किया-यही वे मूल्य हैं, जिन्हें त्रिपाठी जी ने अपने जीवन में न केवल जिया, बल्कि पीढ़ियों तक पहुंचाया। हिंदी विभाग के शिक्षकों और प्रधानाचार्या श्रीमती दीपिका सिंह ने विद्यार्थियों को प्रेरित करते हुए कहा कि हमें त्रिपाठी जी जैसे महान साहित्यकारों की धरोहर को समझना और सहेजना चाहिए। उन्होंने विद्यार्थियों से हिंदी साहित्य के गंभीर अध्ययन और सृजनशील लेखन की दिशा में बढ़ने का आग्रह किया।

कार्यक्रम का समापन त्रिपाठी जी की स्मृति में दो मिनट के मौन ध्यान से हुआ, जिससे उपस्थित जनों के मन में उनके प्रति श्रद्धा और साहित्यिक प्रेरणा की भावना जागृत हुई।

ऐसे आयोजन न केवल महान व्यक्तित्वों को श्रद्धांजलि देने का माध्यम बनते हैं, बल्कि विद्यार्थियों में ज्ञान, संस्कृति और साहित्य के प्रति चेतना जगाने का कार्य भी करते हैं। नवाल्स नेशनल एकेडमी निरंतर एक ऐसे शैक्षिक परिवेश का निर्माण कर रहा है, जहाँ परंपरा और आधुनिकता का सुंदर संगम दिखाई देता है।

"शब्दों में संसार बदलने की शक्ति होती है -आइए, हम भी शब्दपुरुष की तरह उनका सदुपयोग करें।"

मुख्य बिंदु

- साहित्य के दीपस्तंभ को भावांजलि
- "शब्दपुरुष" की विरासत को नमन-नवाल्स में श्रद्धांजलि कार्यक्रम
- शब्द-संस्कार की परंपरा के वाहक को स्मरण
- श्रद्धा, साहित्य और संस्कार की त्रिवेणी ‌ त्रिपाठी जी की पुण्यतिथि पर विशेष आयोजन
- जिनके शब्द बने जीवन का दीप-शब्दपुरुष को भावभीनी श्रद्धांजलि
- साहित्यिक चेतना के ज्योति-पुंज को विद्यालय की श्रद्धांजलि
- विचारों के प्रहरी को शत् शत् नमन
- साहित्यिक अनुशासन और संस्कारों के प्रतीक को समर्पित एक दिन
- "शब्द ही जीवन है"-त्रिपाठी जी की स्मृति में विद्यार्थियों की भावांजलि

10_Page_01.qxd 22/07/2025 1:47 PM Page 1

श्रद्धा-सुमन अर्पित : नवल्स खजनी में संस्थापक को भावभीनी श्रद्धांजलि

संस्थापक की पुण्यतिथि पर भावपूर्ण श्रद्धांजलि

■ **प्रार्थना सभा से हुआ आरंभ :** दिन की शुरुआत प्रातःकालीन प्रार्थना सभा से हुई। विद्यालय प्रांगण में संस्थापक का चित्र स्थापित कर पुष्प अर्पण और अगरबत्ती से श्रद्धांजलि दी गई। ■ **प्रधानाचार्य एवं सभी शिक्षक-छात्रों की सहभागिता :** प्रधानाचार्य श्री अरुणेश पाण्डेय ने एलकेजी से कक्षा आठ तक के विद्यार्थियों और सभी शिक्षकों के साथ संस्थापक को श्रद्धा-सुमन अर्पित किए।

शिक्षक संवाददाता

नवल्स खजनी। नवल्स नेशनल एकेडमी, खजनी में संस्थान के संस्थापक अध्यक्ष, 'शब्द पुरुष' दिवंगत आचार्य सत्य नारायण त्रिपाठी जी की आठवीं पुण्यतिथि पर एक भावपूर्ण श्रद्धांजलि समारोह का आयोजन किया गया।

विद्यालय प्रांगण में आयोजित इस कार्यक्रम की शुरुआत प्रातःकालीन प्रार्थना सभा से हुई। तत्पश्चात विद्यालय के प्रधानाचार्य अरुणेश पाण्डेय ने एलकेजी से कक्षा आठ तक के सभी शिक्षक-शिक्षिकाओं एवं विद्यार्थियों के साथ संस्थापक के चित्र पर पुष्पांजलि एवं अगरबत्ती अर्पित कर श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

कार्यक्रम का उद्देश्य न केवल संस्थापक को श्रद्धांजलि अर्पित करना था, बल्कि उनके द्वारा निर्धारित शैक्षिक आदर्शों और जीवन मूल्यों को स्मरण कर उन्हें आत्मसात करना भी था। विद्यालय परिवार ने संस्थापक की दूरदर्शिता, त्याग, निष्ठा और शिक्षा के प्रति समर्पण को भावुकता से याद किया।

इस अवसर पर प्रधानाचार्य श्री पाण्डेय ने कहा, "आचार्य त्रिपाठी जी हमारे पथ-प्रदर्शक रहे हैं। उनकी सोच और सिद्धांत आज भी हमारे कार्यों का मार्गदर्शन करते हैं। उनकी शिक्षाएं हमें शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्टता की ओर प्रेरित करती रहेंगी।"

छात्रों, शिक्षकों और कर्मचारियों ने संस्थापक के विचारों को आत्मसात करते हुए संस्था की उज्ज्वल परंपरा को आगे बढ़ाने की सामूहिक प्रतिज्ञा ली। समारोह का वातावरण शांति, श्रद्धा और कृतज्ञता से भर गया, जिसमें हर चेहरा संस्थापक की स्मृति में नतमस्तक दिखाई दिया।

आठवीं पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि समारोह आयोजित

संस्थान के संस्थापक 'शब्द पुरुष' स्व. आचार्य सत्य नारायण त्रिपाठी जी की पुण्यतिथि पर गहरी श्रद्धा और भक्ति के साथ समारोह आयोजित किया गया।

■ संस्थापक के मूल्यों और आदर्शों की पुनः प्रतिज्ञा

विद्यालय परिवार ने संस्थापक द्वारा स्थापित शैक्षिक दृष्टिकोण और कार्य योजनाओं को आगे बढ़ाने की प्रतिबद्धता दोहराई।

■ शांति व कृतज्ञता का भावपूर्ण वातावरण

समस्त विद्यालय समुदाय की सहभागिता से वातावरण श्रद्धा, शांति और कृतज्ञता से भर उठा।

नवल नेशनल अकैडमी बक्शीपुर में स्व. सत्यनारायण त्रिपाठी जी की पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि सभा आयोजित

'शब्द पुरुष' को श्रद्धा सुमन

- दीप प्रज्वलन व मौन श्रद्धांजलि से हुआ कार्यक्रम का शुभारंभ, प्रधानाचार्य शैलेंद्र साहनी ने व्यक्त किए विचार, बताया उन्हें महान साहित्यकार व विचारक,
- विद्यार्थियों व शिक्षकों ने पुष्प अर्पित कर अर्पित की भावभीनी श्रद्धांजलि,
- त्रिपाठी जी का जीवन बना प्रेरणास्त्रोत, उनके मूल्यों को आत्मसात करने का लिया संकल्प

शैलजा मिश्रा/शिक्षक संवाददाता

नवल्स बक्शीपुर। नवल नेशनल अकैडमी में विद्यालय के प्रबंधक नवल किशोर त्रिपाठी के पिताश्री एवं वरिष्ठ साहित्यकार स्वर्गीय सत्यनारायण त्रिपाठी जी की पुण्यतिथि के अवसर पर एक श्रद्धांजलि सभा का आयोजन श्रद्धा एवं गरिमा के साथ किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्वलन और दो मिनट के मौन श्रद्धांजलि से हुई, जिसमें समस्त शिक्षकगण, विद्यार्थीगण एवं विद्यालय परिवार ने सहभागिता निभाई। सभा का संचालन शांतिपूर्ण एवं भावनात्मक वातावरण में संपन्न हुआ।

विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री शैलेंद्र साहनी ने स्वर्गीय त्रिपाठी जी के साहित्यिक योगदान और जीवन मूल्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा, "वे न केवल एक वरिष्ठ हिंदी प्रोफेसर थे, बल्कि समाज को दिशा देने वाले महान विचारक भी थे। उनकी लेखनी में भारतीय संस्कृति, नैतिकता और शिक्षाप्रद दृष्टिकोण की स्पष्ट झलक मिलती थी।"

सभा में विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने फूल अर्पित कर श्रद्धांजलि दी तथा उन्हें "शब्द पुरुष" की उपाधि के योग्य बताते हुए उनके जीवन से प्रेरणा लेने की बात कही। विद्यार्थियों ने भी उनके विचारों को आत्मसात करने का संकल्प लिया।

प्रधानाचार्य श्री साहनी ने यह भी कहा कि, "स्वर्गीय त्रिपाठी जी का साहित्यिक अवदान आने वाली पीढ़ियों के लिए अमूल्य धरोहर है। उनके आदर्शों को अपनाकर हम शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में सकारात्मक परिवर्तन ला सकते हैं।"

कार्यक्रम के अंत में विद्यालय परिवार ने यह संकल्प लिया कि स्वर्गीय त्रिपाठी जी के विचारों, मूल्यों और जीवन दृष्टिकोण को आत्मसात करते हुए उन्हें सदैव स्मरण करते रहेंगे।

नेत्र स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता की दिशा में शिक्षण संस्थान की अनूठी पहल

नेत्र जांच शिविर का हुआ सफल आयोजन

◆ राज आई क्लीनिक के सहयोग से विशेष नेत्र जांच शिविर का आयोजन, ◆ आधुनिक मशीनों से विद्यार्थियों की आंखों की जांच की गई, ◆ बच्चों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया, स्वास्थ्य के प्रति दिखवाया जागरूकता, ◆ विद्यालय प्रधानाचार्य ने भविष्य में और भी स्वास्थ्य कार्यक्रमों की घोषणा की

शैलजा मिश्रा/शिक्षक संवाददाता

नवल्स बक्शीपुर। नवल्स नेशनल अकैडमी में विद्यार्थियों की नेत्र सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए सोमवार को विशेष नेत्र जांच शिविर का आयोजन किया गया। यह शिविर राज आई क्लीनिक के सहयोग से संपन्न हुआ जिसमें सैकड़ों बच्चों की आंखों की जांच की गई।

राज आई हॉस्पिटल की अनुभवी डॉक्टरों की टीम ने अत्याधुनिक मशीनों की सहायता से प्रत्येक विद्यार्थी की नेत्र परीक्षण किया। जांच शिविर के दौरान विद्यार्थियों में जबरदस्त उत्साह देखा गया। सभी बच्चों ने सक्रिय रूप से भाग लेते हुए स्वास्थ्य के प्रति सजगता दिखाई।

विद्यालय के प्रधानाचार्य शैलेंद्र साहनी ने कार्यक्रम की सफलता पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा,

"हमारा विद्यालय सिर्फ शिक्षण ही नहीं, विद्यार्थियों के समग्र विकास और स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी पूरी तरह प्रतिबद्ध है। भविष्य में भी ऐसे स्वास्थ्य जागरूकता शिविर आयोजित किए जाते रहेंगे।"

नवल्स नेशनल अकैडमी द्वारा समय-समय पर किए जाने वाले इस प्रकार के आयोजन विद्यार्थियों के शारीरिक और मानसिक विकास के लिए अत्यंत आवश्यक हैं।

◆ विशेषज्ञ टीम द्वारा नेत्र परीक्षण

राज आई हॉस्पिटल की अनुभवी डॉक्टर्स टीम ने अत्याधुनिक मशीनों की सहायता से विद्यार्थियों की आंखों की जांच की।

◆ बच्चों ने दिखवाई जागरूकता

शिविर में बच्चों ने उत्साहपूर्वक भाग लेते हुए स्वास्थ्य के प्रति सजगता दिखाई।

◆ विद्यालय प्रशासन की सराहना

प्रधानाचार्य श्री शैलेंद्र साह्नी ने डॉक्टर्स टीम एवं स्कूल प्रबंधन का आभार व्यक्त करते हुए कहा, "हम शिक्षा के साथ-साथ विद्यार्थियों के शारीरिक स्वास्थ्य के प्रति भी पूर्णतः सजग हैं। भविष्य में भी ऐसे कार्यक्रम आयोजित किए जाते रहेंगे।"

◆ समग्र विकास की दिशा में कदम

नवल्स नेशनल अकैडमी द्वारा समय-समय पर किए जाने वाले इस प्रकार के आयोजन विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य और अच्छे स्वास्थ्य के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

नवल्स नेशनल अकैडमी बक्शीपुर में राज आई क्लीनिक की टीम विद्यार्थियों की नेत्र जांच करते हुए

"पवित्र श्रावण मास का महात्म और महादेव"

अजय तिवारी

" मृत्युंजयाय रुद्राय नीलकण्ठाय शम्भवे।
अमृतेशाय शर्वाय महादेवाय ते नमः॥"

श्रावण मास, जिसे सावन भी कहा जाता है, हिंदू कैलेंडर का एक पवित्र महीना है जो भगवान शिव को समर्पित है। यह महीना न केवल धार्मिक महत्व रखता है, बल्कि इसका सांस्कृतिक और प्राकृतिक महत्व भी है। इस महीने में लोग भगवान शिव की पूजा–अर्चना करते हैं, उपवास रखते हैं, और विभिन्न धार्मिक अनुष्ठानों में भाग लेते हैं। श्रावण मास में प्रकृति भी हरी–भरी और जीवंत हो उठती है, जिससे यह महीना आध्यात्मिक और प्राकृतिक रूप से महत्वपूर्ण हो जाता है।

धार्मिक महत्व– भगवान शिव को समर्पित- श्रावण मास भगवान शिव को समर्पित है, और इस महीने में उनकी पूजा–अर्चना करने से विशेष फल मिलता है।

सोमवार का महत्व : श्रावण मास के प्रत्येक सोमवार को "श्रावण सोमवार" कहा जाता है, और इस दिन भक्त भगवान शिव की विशेष पूजा करते हैं, जलाभिषेक करते हैं, और रुद्राभिषेक करते हैं।

उपवास- श्रावण मास में उपवास (व्रत) रखना एक आम बात है, खासकर सोमवार को। उपवास करने से शरीर और मन शुद्ध होते हैं।

कांवड़ यात्रा : श्रावण मास में कांवड़ यात्रा एक महत्वपूर्ण धार्मिक गतिविधि है, जिसमें भक्त गंगाजल भरकर लाते हैं और भगवान शिव को अर्पित करते हैं।

सांस्कृतिक महत्व– पारंपरिक उत्सव- श्रावण मास में कई पारंपरिक उत्सव मनाए जाते हैं, जैसे कि हरियाली तीज और नाग पंचमी, जो प्रकृति और फसल से जुड़े हैं।

भक्ति का माहौल– श्रावण मास में पूरे वातावरण में भक्ति का माहौल होता है, और लोग एक–दूसरे के साथ मिलकर उत्सव मनाते हैं।

प्राकृतिक महत्व– वर्षा ऋतु : श्रावण मास वर्षा ऋतु का समय होता है, जब प्रकृति हरी–भरी और जीवंत हो उठती है।

प्रकृति का उत्सव : श्रावण मास प्रकृति का उत्सव है, और लोग इस महीने में प्रकृति के साथ जुड़कर आनंदित होते हैं।

स्वास्थ्य लाभ, उपवास के लाभ : श्रावण मास में उपवास करने से शरीर को डिटॉक्सिफाई करने और पाचन तंत्र को स्वस्थ रखने में मदद मिलती है।

तनाव से राहत : श्रावण मास में धार्मिक गतिविधियों और प्रकृति के साथ जुड़ने से तनाव कम होता है और मानसिक शांति मिलती है।

श्रावण मास एक पवित्र, सांस्कृतिक, और प्राकृतिक रूप से महत्वपूर्ण महीना है। यह महीना भगवान शिव की आराधना, उपवास, और विभिन्न धार्मिक अनुष्ठानों के लिए जाना जाता है। इसके साथ ही, यह महीना प्रकृति के उत्सव का भी समय है, और लोग इस महीने में प्रकृति के साथ जुड़कर आनंदित होते हैं। श्रावण मास का आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, और प्राकृतिक महत्व इसे एक विशेष महीना बनाता है।

हिंदू धर्म में सावन के महीने को एक त्योहार की तरह मनाया जाता है। सावन के इस पूरे महीने में भगवान शिव के भक्त उनकी भक्ति में रम जाते हैं। पंचांग के अनुसार, देखा जाए तो साल के पाँचवें महीने को श्रावण माह कहा जाता है। हिंदू धर्म में ऐसा माना जाता है कि सावन के महीने में भगवान शिव की पूजा–उपासना करने से वे प्रसन्न होकर अपने भक्तों की सभी परेशानियों को दूर करते हैं। सावन के महीने में पड़ने वाले सोमवार का अपना एक विशेष महत्त्व होता है और इस बार श्रावण मास का प्रारंभ सोमवार से ही होने जा रहा है। इस प्रकार इस वर्ष श्रवण मार्च में कुल 5 सोमवार पड़ रहे हैं। श्रावण मास को मासोत्तम मास कहा जाता है। यह माह अपने हर एक दिन में एक नया सवेरा दिखाता इसके साथ जुड़े समस्त दिन धार्मिक रंग और आस्था में डूबे होते हैं। शास्त्रों में सावन के महात्म्य पर विस्तार पूर्वक उल्लेख मिलता है। श्रावण मास अपना एक विशिष्ट महत्त्व रखता है। श्रवण नक्षत्र तथा सोमवार से भगवान शिव शंकर का गहरा सम्बन्ध है। इस मास का प्रत्येक दिन पूर्णता लिए हुए होता है। धर्म और आस्था का अटूट गठजोड़ हमें इस माह में दिखाई पड़ता है। इस मास की प्रत्येक तिथि का सम्बन्ध किसी न किसी व्रत और पूजा पाठ के साथ होता है जिसका बेहद धार्मिक महत्त्व है।

सावन मास को सभी मासों में सर्वश्रेष्ठ माना गया है। यहाँ कुछ पौराणिक तथ्य आप सभी से साझा करना चाहता हूँ जिससे यह तथ्य उभरकर सामने आता है कि क्यों सावन मास सर्वोत्तम माना गया है।

मरकंडू ऋषि के पुत्र मारकण्डेय ने लंबी आयु के लिए सावन माह में ही घोर तप कर शिव की कृपा प्राप्त की थी, जिससे मिली मंत्र शक्तियों के सामने मृत्यु के देवता यमराज भी नतमस्तक हो गए थे।

शिवपुराण में उल्लेख है कि भगवान शिव स्वयं ही जल हैं। इसलिए जल से उनकी अभिषेक के रूप में अराधना का उत्तमोत्तम फल है, जिसमें कोई संशय नहीं है।

इस सम्बन्ध में एक पौराणिक कथा है कि जब सनत कुमारों ने महादेव से उन्हें सावन महीना प्रिय होने का कारण पूछा, तो महादेव भगवान शिव ने बताया कि जब देवी सती ने अपने पिता दक्ष के घर में योगशक्ति से शरीर त्याग किया था, उससे पहले देवी सती ने महादेव को हर जन्म में पति के रूप में पाने का प्रण किया था। अपने दूसरे जन्म में देवी सती ने पार्वती के नाम से हिमाचल और रानी मैना के घर में पुत्री के रूप में जन्म लिया। पार्वती ने युवावस्था के सावन महीने में निराहार रहकर कठोर व्रत किया और उन्हें प्रसन्न कर विवाह किया जिसके बाद से ही महादेव के लिए यह माह विशेष हो गया।

शास्त्रों में वर्णित है कि सावन महीने में भगवान विष्णु योगनिद्रा में चले जाते हैं। आगे आने वाले चार माह तक भगवान योग निद्रा में ही रहते हैं। इसलिए इन चार माह श्रवण, भाद्रपद, आश्विन और कार्तिक को चातुर्मास के नाम से भी जाना जाता है। यह समय शिव भक्तों और साधु–संतों सभी के लिए अमूल्य होता है। श्रवण नक्षत्र को भगवान विष्णु का जन्म नक्षत्र बताया गया है जिससे इस मास का नाम श्रावण मास पड़ा। सावन के प्रारंभ होते हैं सृष्टि के संचालन का उत्तरदायित्व भगवान शिव ग्रहण करते हैं। इस दौरान सृष्टि का पुनर्निर्माण दृष्टिगोचर होता है। ब्रह्मांड में शिव तत्त्व की प्रचुरता और प्रबलता पाई जाती हैं जो मानव मात्र के मस्तिष्क, इंद्रियों, शरीर और आत्मा के शुद्धिकरण का कार्य करती है। इसलिए सावन के प्रधान देवता भगवान शिव बन जाते हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि जीवन का चक्र पूर्णता को प्राप्त होता है, एक और जहाँ भगवान विष्णु सृष्टि की रचना करते हैं और उसके पालनहार हैं तो वहीं दूसरी ओर विनाश, संहार और पुनर्निर्माण के माध्यम से भगवान शिव सृष्टि को नया रूप प्रदान करते हैं। यही वास्तव में सृष्टि का नियम भी है जब पुराना जाता है तभी नए का आगमन हो पता है।

शिव का श्रावण में जलाभिषेक के संदर्भ में एक अन्य पौराणिक कथा बहुत प्रचलित है। जिसके अनुसार श्रावण मास में है अमृत की खोज की जा रही थी। जिस समय अमृत की खोज की जा रही थी, देवों और राक्षसों द्वारा अमृत प्राप्त करने के लिए समुद्र मंथन किया गया। उस मंथन के समय समुद्र में से 14 विभिन्न रत्नों के मिलने का उल्लेख मिलता है। उन उपलब्ध रत्नों में अमृत कलश से पूर्व कालकूट विष या हालाहल भी निकला। उसकी भयंकर ज्वाला से समस्त ब्रह्माण्ड जलने लगा। इस संकट से व्यथित समस्त जन भगवान शिव के पास पहुँचे और उनके समक्ष प्रार्थना करने लगे। सभी की प्रार्थना पर भगवान शिव ने सृष्टि को बचाने हेतु उस विष को अपने कंठ में उतार लिया और उसे वहीं अपने कंठ में अवरुद्ध कर लिया। इसके फलस्वरुप उनका कंठ नीला हो गया। इसी से उनका नाम 'नीलकंठ महादेव' पड़ा। विष के प्रभाव को कम करने और समुद्र मंथन से प्राप्त उस हलाहल के तपन को शांत करने हेतु सभी देवी–देवताओं और राक्षसों ने भगवान शिव को गंगाजल और दूध पिलाया। इस प्रकार गंगाजल से भगवान शिव का पूजन व जलाभिषेक आरंभ हुआ। तभी से यह प्रथा आज भी चली आ रही है। प्रभु का जलाभिषेक करके समस्त भक्त उनकी कृपा को पाते हैं और उन्हीं के रस में विभोर होकर जीवन के अमृत को अपने भीतर प्रवाहित करने का प्रयास करते हैं। इस प्रकार श्रावण मास में शिवलिंग पर जल चढ़ाने का अपना एक विशेष ही महत्त्व है।

शास्त्रों के अनुसार ऐसी मान्यता है कि भगवान शिव सावन के महीने में पृथ्वी पर अवतरित होकर अपनी ससुराल गए थे। वहाँ उनका स्वागत अर्घ्य और जलाभिषेक से किया गया था। माना जाता है कि प्रत्येक वर्ष सावन माह में भगवान शिव अपनी ससुराल आते हैं। भू–लोक वासियों के लिए शिव कृपा पाने का यह उत्तम समय होता है।

धर्म शास्त्रों में वर्णित एक अन्य पौराणिक कथा के अनुसार भगवान परशुराम ने अपने आराध्य देव शिव की इसी माह नियमित पूजन के अंतर्गत कांवड़ में गंगाजल भरकर उसे शिवलिंग पर अर्पित किया था। इस प्रकार रावण के माध्यम से जल लाकर शिवलिंग पर अर्पित करने की परंपरा उसी समय से चली आ रही है। कांवड़ परंपरा चलाने वाले भगवान परशुराम की पूजा भी श्रावण मास में की जाती है। शिव को श्रावण का सोमवार विशेष रूप से प्रिय है। श्रावण में भगवान आशुतोष का गंगाजल व पंचामृत से अभिषेक करने से शीतलता मिलती है। कहते हैं कि भगवान परशुराम के कारण ही श्रावण मास में शिवजी का व्रत और पूजन प्रारंभ हुआ। हम सभी जानते हैं आज भी कांवड़ यात्रा का अपना एक विशेष महत्त्व है। इस दौरान कांवरिया नदियों से अपने–अपने कांवड़ में जल लाकर भगवान शिव को अर्पित करते हैं। सावन माह में भगवान शिव के जल अभिषेक का अत्यधिक महत्त्व है।

हिंदु पंचांग के अनुसार सभी मासों को किसी न किसी देवता के साथ संबंधित देखा जा सकता है। उसी प्रकार श्रावण मास को भगवान शिव जी के साथ देखा जाता है। इस समय शिव आराधना का विशेष महत्त्व होता है। यह माह आशाओं की पूर्ति का समय होता है। जिस प्रकार प्रकृति ग्रीष्म के थपेड़ों को सहती हुई सावन की बौछारों से अपनी प्यास बुझाती हुई असीम तृप्ति एवं आनंद को पाती है उसी प्रकार प्राणियों की इच्छाओं को सूनेपन को दूर करने हेतु यह माह भक्ति और पूर्ति का अनूठा संगम दिखाता है ओर सभी की अतृप्त इच्छाओं को पूर्ण करने की कोशिश करता है। भगवान शिव इसी माह में अपनी अनेक लीलाएँ रचते हैं। इस महीने में गायत्री मंत्र, महामृत्युंजय मंत्र, पंचाक्षर मंत्र इत्यादि शिव मंत्रों का जाप शुभ फलों में वृद्धि करने वाला होता है। पूर्णिमा तिथि का श्रवण नक्षत्र के साथ योग होने पर श्रावण माह का स्वरूप प्रकाशित होता है। श्रावण माह के समय भक्त शिवालय में स्थापित, प्राण–प्रतिष्ठित शिवलिंग या धातु से निर्मित लिंग का गंगाजल व दुग्ध से रुद्राभिषेक कराते हैं। शिवलिंग का रुद्राभिषेक भगवान शिव को अत्यंत प्रिय है। इन दिनों शिवलिंग पर गंगा जल द्वारा अभिषेक करने से भगवान शिव अति प्रसन्न होते हैं। ऐसी मान्यता है कि रुद्राभिषेक करने से हमारे आसपास की नकारात्मक ऊर्जा समाप्त होती है हमारे द्वारा पूर्ण किए गए ग़लत कार्यों का पश्चाताप होता है जिससे हमारी आत्मा एक प्रकार से आध्यात्मिक विकास की ओर अग्रसर होती है।

शिवलिंग का अभिषेक महा फलदायक माना गया है। इन दिनों अनेक प्रकार से शिवलिंग का अभिषेक किया जाता है जो भिन्न–भिन्न फलों को प्रदान करने वाला होता है। जैसे कि जल से वर्षा और शीतलता की प्राप्ति होती है। घी और दूर से अभिषेक करने पर संतान की प्राप्ति होती है। ईख के रस से धन संपदा की प्राप्ति होती है। कुशोदक से समस्त व्याधि शांत होती है। दधि से पशु धन की प्राप्ति होती है। और शहद से शिवलिंग पर अभिषेक करने से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।

मानवीय मूल्यों की तलाश के लिए परम आवश्यक है कि हम शिव तत्त्व को जाने और अपने भीतर खोजें। मूल्यों की तलाश के लिए जीवन में शिव तत्त्व की खोज ज़रूरी है। शिव हमेशा तपस्या, ध्यान और चिंतन के पथ पर चलते हैं। इससे उनको शक्ति और ऊर्जा प्राप्त होती है। इस शक्ति के कारण ही वह अभय होते हैं और ऊर्जा के कारण प्रभुत्व की कामना नहीं रहती है। शायद यही वजह है कि हमारे शास्त्रों में उन्हें पालनकर्ता और संहारक दोनों ही स्वरूपों में देखा गया है। ऊर्जा का विस्तार ही शिव को असीम और अनंत बनाता है। अपने भीतर ऊर्जा के विस्तार के कारण शिव नृत्य करते हैं और खुद के अंदर प्रकृति के विभिन्न शक्ति रूपों को देखकर प्रसन्न होते हैं। यह नृत्य शिव तांडव के नाम से जाना जाता है।

भगवान शिव को सावन बहुत प्रिय है क्योंकि प्रकृति अपने संपूर्ण रस और रंगों के साथ अठखेलियाँ करती है। यह माँ हमें आध्यात्मिक स्वतंत्रता का संदेश भी देता है। सावन एक अवसर देता है कि हम अपने अंदर काम कर रही प्रकृति की शक्तियों को जान लें। हम खाते हैं, पढ़ते हैं और विकसित होते हैं। हम प्राकृतिक शक्तियों के अधीन हैं। वह हमें बाध्य करती है, लेकिन जब हम आध्यात्मिक रूप से जाग जाते हैं, तो शिव से मुलाक़ात होती है। पर इसके लिए नियंत्रण और ऊर्जा की ज़रूरत होगी। जिसकी प्राप्ति तप, ध्यान और चिंतन से ही होती है। श्रावण मास इन सब के लिए सर्वथा अनुकूल मानस माना गया है। माता पार्वती ने तप और ध्यान से भगवन शिव को पाया, इसलिए मनुष्य भी दिव्य प्रकृति और उसके परम सत्य को जानने का अधिकारी है। सावन हमें उस परम सत्य को जानने के लिए आध्यात्मिक स्वतंत्रता का संदेश देता है।

श्रावण रस और आनंद का मास माना गया है। रसीले फलों के साथ बारिश की फुहार तन–मन को संतुष्ट करती है। यह अगर दिल तक नहीं पहुँच पा रही है, तो इसका तात्पर्य है कि हम शिव तत्त्व से दूर हैं। ऐसे में इस महीने को यूँ ही नहीं जाने देना चाहिए। इसके साथ खुद बदलें। बदलाव प्रकृति की विशेषता है। बदलाव ही शिव है। सावन कहता है शिव को देखो, जो आशा और जीवन के प्रतीक है। सावन अगर भीतर आया, हरियाली को जब हम स्पर्श करेंगे, तो जीवन में रस आएगा। प्रकृति सावन में रस का भरपूर बौछार कर रही है। हमें उस रस का स्वाद लेना है।

निर्माण और सृजन में श्रावण मास की बहुत ही महत्त्वपूर्ण भूमिका है। हम सभी जानते हैं कि बिना प्रेम, पवित्रता और समर्पण के भाव के किसी भी प्रकार का सृजन सम्भव नहीं है। सावन का हर दिन व्रत और पर्व को समर्पित है। चूँकि शक्ति से ही शक्तिमान हैं। इस कारण शंकर की पूजा सावन के हर सोमवार और हर मंगलवार को मंगला गौरी व्रत का अनुष्ठान होता है। मंगलवार को होने के कारण इसे गौरी मंगला व्रत कहा जाता है। शक्ति के साथ शिव कल्याणकारी हों, इसलिए सावन पूरी तरह से शिव–शक्ति को समर्पित महीना है।

इस पावन मास में श्रद्धालु भगवान शिव और माता पार्वती की पूजा करते हैं। श्रावण मास में ज़्यादातर श्रद्धालु सोमवार के दिन व्रत रखते हैं और भगवान शिव की शुद्ध मन से पूजा करते हैं। अविवाहित लड़कियाँ श्रावण के हर मंगलवार को मंगला गौरी का व्रत रखती हैं। कुछ महिलाएँ मनचाहा पति पाने के लिए सोमवार व्रत करती हैं और भगवान शिव का आशीर्वाद प्राप्त करती हैं। श्रावण के दौरान कांवड़ यात्रा भी बहुत प्रसिद्ध है, जिसमें श्रद्धालु पवित्र गंगा के पास विभिन्न धार्मिक स्थानों पर जाते हैं और वहाँ से गंगाजल लाकर शिवरात्रि के दिन भगवान शिव को चढ़ाते हैं। भगवान शिव की आराधना और पूजा में मुख्य रूप से तीन मंत्रों का जाप का उल्लेख शास्त्रों द्वारा किया गया है।

ॐ नमः शिवाय!!
ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगंधिम पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात॥
कर्पूर गौरं करुणावतारं संसार सारं, भुजगेंद्र हारम।

श्रावण मास सिर्फ मनुष्यों में ही नही अपितु पशु पक्षियों में भी एक नव चेतना का संचार करता है। जब प्रकृति अपने पुरे यौवन पर होती है और रिमझिम फुहारे साधारण व्यक्ति को भी कवि हृदय बना देती है। सावन में मौसम का परिवर्तन होने लगता है।प्रकृति हरियाली और फूलो से धरती का श्रुंगार देती है परन्तु धार्मिक परिदृश्य से सावन मास भगवान शिव को ही समर्पित रहता है।

मान्यता है कि शिव आराधना से इस मास में विशेष फल प्राप्त होता है। इस महीने में हमारे सभी ज्योतिर्लिंगों की विशेष पूजा ,अर्चना और अनुष्ठान की बड़ी प्राचीन एवं पौराणिक परम्परा रही है। रुद्राभिषेक के साथ साथ महामृत्युंजय का पाठ तथा काल सर्प दोष निवारण की विशेष पूजा का महत्वपूर्ण समय रहता है।यह वह मास है जब कहा जाता है जो मांगोगे वही मिलेगा।भोलेनाथ सबका भला करते है।श्रावण महीने में हर सोमवार को शिवजी का व्रत या उपवास रखा जाता है।श्रावण मास में पुरे माह भी व्रत रखा जाता है। इस महीने में प्रत्येक दिन स्कन्ध पुराण के एक अध्याय को अवश्य पढना चाहिए। यह महीना मनोकामनाओ का इच्छित फल प्रदान करने वाला माना जाता है। पुरे महीने शिव परिवार की विशेष पूजा की जाती है। श्रावण मास में मंगलवार के व्रत को मंगला गौरी व्रत कहा जाता है। जिन कन्याओं के विवाह में विलम्ब हो रहा है उन्हें श्रावण में मंगला गौरी का व्रत रखना लाभदायक रहता है।सावन की महीने में श्रावण शिवरात्रि और हरियाली अमावस का भी अपना अलग अलग महत्व है।

श्रावण मास की विशेषता !!

श्रावण के सोमवार पर रखे गये व्रतो की महिमा अपरम्पार है।जब सती ने अपने पिता दक्ष के निवास पर शरीर त्याग दिया था उससे पूर्व महादेव को हर जन्म में पति के रूप में पाने का प्रण किया था। पार्वती ने श्रावण के महीने में ही निराहार रहकर कठोर तप किया था और भगवान शंकर को पा लिया था। इसलिए यह मास विशेष हो गया और सारा वातावरण शिवमय हो गया।

नवल्स नेशनल एकेडमी सूरजकुंड में आयोजित हुई आठवीं पुण्यतिथि व विचार गोष्ठी

शिक्षा, साहित्य और संस्कृति के अग्रदूत रहे आचार्य सत्यनारायण त्रिपाठी जी

वक्ताओं ने श्रद्धेय आचार्य सत्यनारायण त्रिपाठी जी के शिक्षा, साहित्य व संस्कृति में योगदान को बताया प्रेरणादायक, उनके आदर्शों पर चलने का लिया संकल्प। विद्यार्थियों, शिक्षकों व स्टाफ ने पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दी, शिक्षा को चरित्र निर्माण का माध्यम मानने की उनकी सोच को किया नमन।

अजय तिवारी, शिक्षक संवाददाता

नवल्स सूरजकुंड। सूरजकुंड स्थित नवल्स नेशनल एकेडमी में सोमवार को नवल्स समूह के पृष्ठाधार, युग प्रवर्तक, शब्द पुरूष श्रद्धेय आचार्य सत्यनारायण त्रिपाठी जी की आठवीं पुण्यतिथि पर भावपूर्ण श्रद्धांजलि सभा व विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विद्यालय परिवार, शिक्षकों और विद्यार्थियों ने उनके चित्र पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दी।

कार्यक्रम में आचार्य त्रिपाठी जी के "व्यक्तित्व एवं कृतित्व" पर विस्तार से चर्चा की गई। वक्ताओं ने उनके बहुआयामी योगदान–शिक्षा, साहित्य, संस्कृति और समाजसेवा–को याद करते हुए कहा कि वे केवल शिक्षक नहीं, एक विचारधारा थे।

मुख्य बिंदु

बहुआयामी व्यक्तित्व का स्मरण

वक्ताओं ने आचार्य त्रिपाठी जी को एक मनीषी चिंतक, युग दृष्टा और मूल्यनिष्ठ शिक्षा का पुरोधा बताया।

शिक्षा को चरित्र निर्माण से जोड़ा

उनका मानना था कि शिक्षा केवल ज्ञान का प्रसार नहीं, बल्कि व्यक्ति निर्माण का माध्यम होनी चाहिए।

संस्थान को दिया विशिष्ट स्वरूप

उनके नेतृत्व में नवल्स शिक्षण संस्थान एक संस्कारित, नवाचारी एवं मूल्यनिष्ठ शिक्षा केंद्र बना।

संकल्प के साथ श्रद्धांजलि

विद्यालय के समस्त शिक्षक, कर्मचारी व छात्र–छात्राओं ने पुष्पांजलि अर्पित कर उनके आदर्शों पर चलने का संकल्प लिया। नवल्स परिवार ने इस अवसर पर दोहराया कि संस्था आचार्य जी की शिक्षाओं और विचारों को सदैव आत्मसात करती रहेगी और शिक्षा, संस्कार एवं समाजसेवा के क्षेत्र में लगातार आगे बढ़ती रहेगी।

त्रिपाठी जी की पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि अर्पित करते नवल्स नेशनल एकेडमी के शिक्षक, छात्र व स्टाफ सदस्य।